HISTORY, B.A. Hons. II - PAPER II

CAUSES OF THE 1848 FRENCH REVOLUTION
(1848 ई. की क्रांति के कारण)

लुई फिलिप की स्वार्थिम मध्यम नीति, ढुलमुल नीति एवं असफल विदेश नीति ने फ्रांस में जो विरोधी राजनीतिक एवं सामाजिक वातावरण बना दिया था उन सभी में 1848 ई. की क्रांति के अंकुर छिपे थे। 1848 ई. की फ्रांसीसी क्रांति के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे :-

(1) देश में समाजवाद का विकास :- औद्योगिक क्रांति के परिणाम फ्रांस के नये कल-कारखाने थे तथा नये कल-कारखानों के आने से समाज में पूँजीपति और मजदूर दो वर्ग बन गये। पूँजीपतियों का आर्थिक साधनों पर एकाधिकार था, अतः वे दिन-प्रतिदिन अमीर होते जा रहे थे, लेकिन मजदूर वर्ग दिन-प्रतिदिन गरीब होता जा रहा था, परिणाम स्वरूप देश में अनेक समाजवादियों का उदय हुआ। सेण्ट साइमन वह पहला व्यक्ति था जिसने समाज के बहुसंख्यक मजदूर वर्ग के लिए समाजवादी योजना प्रस्तुत की। उनका मानना था कि उत्पादन के साधनों पर राज्य का स्वामित्व हो तथा प्रत्येक व्यक्ति को क्षमतानुसार कार्य एवं सेवानुसार प्रतिफल मिले। लेकिन सेण्ट साइमन एक कल्पनावादी विचारक था, उसका समाजवादी सिद्धांत व्यावहारिक नहीं था। दूसरा समाजवादी लुई ब्लांक था। लुई ब्लांक ने सेण्ट साइमन के सिद्धांत को व्यावहारिक रूप प्रदान किया। लुई ब्लांक ने अपने विचारों को 'श्रम संगठन' (Organisation of Labour) नामक पुस्तक के माध्यम से व्यक्त किया। लुई ब्लांक की यह पुस्तक 1848 ई. की 'क्रांति की बाइबिल' (Bible of the 1848 Revolution) बन गयी। वास्तव में 1848 ई. की क्रांति में इस पुस्तक का वही महत्व था जो 1789 की क्रांति में रूसो की पुस्तक 'सामाजिक समझौता' (Social Contract) का था। श्रम संगठन नामक पुस्तक की मूल विचारधारा थी कि हर व्यक्ति को काम पाने का अधिकार है तथा राज्य का कर्तव्य है कि वह उसको कार्य दे, प्रत्येक व्यक्ति को काम के आधार पर मान्यता मिलनी चाहिये। उत्पादन के साधनों पर सरकार का आधिपत्य हो, जिससे पूँजीपति वर्ग श्रमिकों के मेहनत के फल को हड़प न कर सकें।

इस प्रकार लुई ब्लांक वह पहला व्यक्ति था जिसने जुलाई राजतंत्र को उखाड़ फेंकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। अपनी योजनाओं के द्वारा उसने फ्रांस के श्रमिकों के मन में यह बात बैठा दी कि वर्तमान अर्थ व्यवस्था दोषपूर्ण है। उसने बड़े कटु शब्दों में मध्यवर्गीय सरकार की आलोचना की। लुई फिलिप की सरकार को उसने पूँजीपतियों की सरकार कहा। लुई ब्लांक ने अपने सिद्धांतों को अत्यंत ही स्पष्ट एवं सरल शैली में प्रस्तुत किया जिससे बहुसंख्यक मजदूरों ने उन्हें अंगीकार कर लिया।

Ajanta Products Officer

→

(2) लुई फिलिप का आंशिक समर्थन :- गद्दी पर बैठते समय लुई फिलिप की स्थिति अच्छी नहीं थी, देश की तत्कालिन समस्त पार्टियाँ उसकी विरोधी थीं, ये पार्टियां निम्नलिखित थीं -

(i) बूर्बो दल - यह दल बूर्बो वंश के किसी भी राजकुमार को गद्दी पर बैठाना चाहती थी।

(ii) रिपब्लिकन दल (गणतंत्रवादी) - यह फ्रांस में गणतंत्र की स्थापना करना चाहते थे, इसका नेता लामार्तीन था।

(iii) बोनापार्टिस्ट दल - यह दल नेपोलियन बोनापार्ट के किसी सम्बंधी को गद्दी पर बैठाना चाहता था।

(iv) समाजवादी पार्टी - ये लोग फ्रांस में मजदूरों की सरकार स्थापित करना चाहते थे।

(v) कट्टर राजतंत्रवादी - ये लोग चार्ल्स के पौत्र को गद्दी पर बैठाना चाहते थे।

इस प्रकार फ्रांस में कोई भी दल लुई फिलिप का समर्थक नहीं था। ये समस्त दल इसको गद्दी से उतारने के लिए समय-समय पर विद्रोह कर रहे थे।

(3) लुई फिलिप का अस्थायी मंत्रिमण्डल तथा प्रधानमंत्री ग्वीजो की अनुदार नीति :- लुई फिलिप के प्रारंभिक 10 वर्षों का शासन काल अस्थिर एवं अशांति का था। 10 वर्षों में उसने 10 मंत्री बदले। अन्त में 1840 ई० में फिलिप ने स्वेच्छाचारिता के अवतार ग्वीजो (Guizot) को अपना प्रधानमंत्री बनाया। जनता के कड़े विरोध के बावजूद भी 1848 ई० तक वह इस पद पर बना रहा। ग्वीजो का विश्वास था कि जनता को अधिकार देना शासन को खतरे में डालना है। अतः ग्वीजो ने स्पष्ट रूप से यह घोषणा की कि वह शासन में कोई सुधार नहीं करेगा तथा विदेश नीति में सक्रिय रूप से भाग नहीं लेगा। राजा की स्वेच्छाचारिता के समर्थन में उसने कहा था कि "राज सिंहासन कोई खाली कुर्सी नहीं है।" दूसरी ओर फ्रांस की जनता ग्वीजो को इसलिए भी नहीं चाहती थी क्योंकि वह प्रोटेस्टेण्ट था जबकि फ्रांसीसी जनता कैथोलिक थी। व्यक्तिगत जीवन पवित्र होते हुए भी ग्वीजो का राजनीतिक जीवन बहुत भ्रष्ट था। मन्त्रिमंडल को यद्यपि प्रतिनिधि सदन का समर्थन प्राप्त था और सदन का चुनाव दो लाख मतदाताओं ने किया था, लेकिन जाँच करने पर पता लगा कि ग्वीजो ने भ्रष्ट तरीके से बहुमत को अपने पक्ष में किया था। ऐसी स्थिति का वर्णन एक स्पष्टवादी सदस्य ने इस प्रकार किया, "प्रतिनिधि सभा का एक बाजार है जहाँ प्रत्येक प्रतिनिधि किसी पद या स्थान के लिए सौदा करता है।"

अतः जनता ने ग्वीजो का घोर विरोध किया। ऐसे समय में लुई फिलिप ने अपनी शक्तियों का प्रयोग करके बहुत भारी भूल की। उसने जनता के भाषण तथा लेखन पर तथा उदारतंत्रवादी विचारधारा के समर्थक समाचार-पत्रों पर प्रतिबंध →

लगा दिया। हेजन ने इस नीति के विषय में लिखा है, "यह नकारात्मक एवं अकर्मण्य नीति अनवरत रूप से अपनायी जाती रही जिससे कारण अधिकाधिक असन्तोष उभरता गया।"

(4) मध्यमवर्ग की प्रधानता :- सिंहासन पर बैठने के पश्चात् लुई फिलिप ने जनता को एक उदार संविधान दिया। इसके अन्तर्गत मताधिकार व्यापक करने का प्रयास किया, लेकिन इससे जन साधारण का भला न हो सका क्योंकि मत का आधार धन होने के कारण प्रतिनिधि सभा में सदैव मध्यमवर्ग के लोगों की ही प्रधानता रही। निम्न वर्ग के लिए प्रतिनिधि सभा में मध्यम वर्ग का बहुमत होने के कारण कानून भी मध्यम वर्ग के हित में बनते थे। लुई फिलिप ने 18 वर्ष तक इसी मध्यम वर्ग की सहायता से शासन किया, इसी में से उसकी सरकार को मध्यमवर्गीय सरकार भी कहा जाता है और मताधिकार का अधिकार भी मध्यम और उच्च वर्ग को ही प्राप्त था। लुई की इस नीति से अन्य राजनीतिक दल उसकी हंसी उड़ाते हुए उसे "नागरिक राजा" (Citizen King) की पदवी से विभूषित करने लगे। अतः 1848 ई. की क्रांति से निम्न वर्ग लुई फिलिप को गद्दी से हटाने की सोचने लगे।

(5) लुई फिलिप की असफल विदेश नीति :- लुई फिलिप में वह योग्यता नहीं थी जिसके बल पर वह फ्रांसीसी जनता को एक गौरवपूर्ण विदेश नीति दे सके। वास्तव में, लुई फिलिप की विदेश नीति से फ्रांस की अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति को गहरा धक्का लगा। फ्रांस में सर्वत्र उसकी विदेश नीति की आलोचना होने लगी तथा सारे राजनीतिक दल उसके कट्टर विरोधी हो गये, यूरोप के लगभग प्रत्येक देश से उसके सम्बंध खराब हो रहे।

वास्तव में यह फिलिप का दुर्भाग्य था कि विवेकशील होते हुए भी वह गृह तथा विदेश दोनों ही क्षेत्रों में असफल रहा। देश के भीतर अशान्ति तथा दमनचक्र आरम्भ हो गया। विदेश नीति में उसकी दुर्बलता फ्रांसीसी जनता को अच्छी नहीं लगी। यद्यपि लुई ने धैर्य, कूटनीति तथा विवेक से काम लेकर कभी ऐसा मौका नहीं आने दिया कि फ्रांस को युद्ध के लिए तैयार होना पड़े। लुई का यह कार्य तत्कालिन परिस्थितियों को देखते हुए देश हित में था, किन्तु फ्रांस की जनता इससे संतुष्ट नहीं थी क्योंकि इससे उसकी गौरव भावना की पूर्ति न हो सकी थी। अतः जनता की यही मनोभावना फ्रांस को एक बार पुनः क्रांति के कगार पर ले आयी।